CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीत्रिवेणी-स्तोत्र

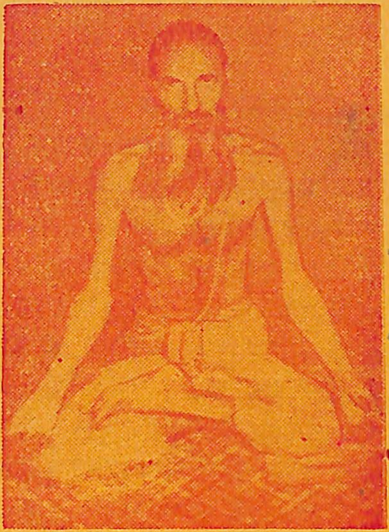

संपादक

श्री स्वामी जयदेव मिश्र

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कीर्तनीयः सदा हरिः

सचित्र

श्री भागवत-चरित

(सप्ताह)

(रचयिता—श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारी)

सात हजार के दो संस्करण निकल चुके हैं तीसरा संस्करण छप गया है।

जिन लोगोंने श्रीब्रह्मचारीजी द्वारा लिखित "भागवती कथा" पढ़ी होगी, उन्हें विदित होगा कि इसमें प्रत्येक अध्याय के आदि में और अन्तमें एकएक छप्पय होती हैं। ये छप्पय परस्पर में संबन्धित होती हैं। केवल छप्पयों को ही पढ़ते जाओ तो पूरी कथाएँ क्रमबद्ध आ जायेंगी। कहना चाहिये "भागवतीकथा" इन छप्पयों का भाष्यमात्र ही है। इन सब छप्पयों को सात भागों में बाँटकर उनके भी अध्याय बना दिये गये हैं। बीच में कथा प्रसङ्ग जोड़ने को दोहा, सोरठा, छन्द तथा पद भी सम्मिलित कर दिये गये हैं। इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र और उनके भक्तों के चरित्र से युक्त यह पद्य काव्य साहित्य की एक अपूर्व वस्तु हो गयी है। भगवद्भक्तों के लिये तो रामायण की भाँति नित्यपाठ करने के लिये यह अलौकिक वस्तु है। सात दिनों में पारायण करने से भागवत सप्ताह का पूर्ण फल इससे प्राप्त हो जायगा। मोटे सुन्दर चिकने कागज पर इसे छापा गया है। ९००से अधिक पृष्ठ इसमें हैं सैकड़ों सादे और रङ्गीन चित्र भी हैं। न्योछावर सजिल्द ५।) आज ही पत्र लिखकर अपनी प्रति मँगालें।

पता—सङ्कीर्तन-भवन, भूसी (प्रयाग)

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

[विश्व-साहित्य का अनुपम-स्तोत्र]

॥ श्री त्रिवेणी स्तोत्र ॥

सम्पादक

श्री स्वामी जयदेवजी मिश्र 'जपाचार्य'

संस्थापक

"श्री दुर्गा-परिचर्याश्रम" प्रयाग

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

भूमिका-लेखक

संतप्रवर श्री १००८ प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

संकीर्तन-भवन झूसी प्रयाग

प्रथमा वृत्ति १०००

मूल्य ।) चार आना

C-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रकाशक-निवेदन

मिथिला (बीहार) से आये हुए मुझे स्थायी रूप से तीर्थराज प्रयाग में निवास करते हुए ३२ वर्ष हो रहे हैं। जो कुछ भी यथा-साध्य जगज्जननी भगवती की उपासना में ही अधिकांश समय गङ्गा तट पर ही व्यतीत किया है। एवं हमारी यही प्रबल इच्छा भी है कि ६५ वर्ष की आयु हो चुकने के बाद भी अब जो भी जीवन शेष बचेगा उसे भगवत्-आराधना में ही व्यतीत करें। भगवती की उपासना एवं शक्ति-पूजा तो हम लोगों के पूर्वजों से ही परम्परागत चली आ रही है। मेरे ही पूर्वज परम तांत्रिक एवं भगवती के उपासक श्री मदन उपाध्यायजी जब प्रयाग स्नान करने आये तो यहाँ के तीर्थ पुरोहितों ने उनसे उपहास एवं व्यङ्ग में कहा कि आप तो सिद्ध तांत्रिक हैं कुछ चमत्कार दिखाइये। उन्होंने भगवती का ध्यान किया एवं कहा कि एक जीवित मछली जमुनाजी से पकड़ लाओ। मछली (रोहू) पकड़ी गई तथा उसे आग में भुनवा दिया। जब मछली आग में भुन गई तो उसे लेकर उसमें पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करके मछली को पुनः जीवित कर दिया। और मरी मछली फिर से तैरकर जमुना में चली गई। इसी कारण मैथिलों का झण्डा भी काले मछली का है प्रयाग में है।

उसी परम्परान्तर्गत जो भी यथासाध्य हो सका है, मैंने भगवती की कृपा से प्रयाग में व प्रयाग के बाहर भी निरन्तर जनता की कल्याणात्मक सेवा एवं भगवत्-आराधना की है। भगवती की ही असीम अनुकम्पा से यह स्तोत्र मुझे आठ-दस वर्ष पहिले प्राप्त हुआ था। इसके लेखक एवं इसकी रचना समय सभी अज्ञात है,

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

किन्तु जो रचना प्रस्तुत है वह संभवतः विश्व साहित्य की एक अनुपम निधि है। संसार-साहित्य में ऐसा दिव्य एवं अनुपम साहित्य-स्तोत्र मिलना नितान्त असम्भव है, सम्पूर्ण वर्णमाला ॐ से लेकर सम्पूर्ण स्वरों एवं व्यञ्जनों से क्रमानुसार लिखा गया साहित्य संसार में कहीं भी नहीं मिल सकता है। ऐसा आनुप्रासिक सस्वर एवं माधुर्य-प्रसाद गुण से ओत-प्रोत भगवती जाह्नवी (गङ्गा) के समान ही गति प्रवाहिनी अभूत-पूर्व साहित्य संसार मात्र के साहित्य में मिलना दुर्लभ है। यह कृति, वास्तव में अपने स्थान पर बेजोड़ है।

मैंने इस कृति की महत्ता को देखते हुए यह नितांत आवश्यक समझा, कि इसका प्रकाशन परम आवश्यक है। मैंने इसकी टीका (अर्थ) एवं कुछ अशुद्धियों को सुधारकर जन-साधारण के हेतु काफी सुलभ बनाने का प्रयत्न किया है। ताकि ज्यादा-से-ज्यादा संख्या में जनता लाभान्वित हो सके। फिर भी जो त्रुटि रह जायेगी, वह अगले प्रकाशन में अवश्य ही सुधारने का प्रयत्न करूंगा। इस स्तोत्र में भगवती त्रिवेणीदेवी को स्तुति की गई है, जिससे कि निश्चय ही ध्यान एवं भक्तिपूर्वक पाठ करने से भक्त-जन भुक्ति एवं मुक्ति को प्राप्त करेंगे।

इस विषय में इसकी उपयोगिता एवं महत्व, स्वनामधन्य संत प्रवर श्री १००८ प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी ने वर्णित कर दिया है, अतः अब इसके महत्व का वर्णन करना मैं आवश्यक नहीं समझता हूँ। उन्होंने काफी स्पष्ट रूप में इसकी महत्ता को समझाकर लिखा है जोकि जन-साधारण आसानी से समझकर इसके महत्व को जान सकता है। अस्तु!

इस पुस्तक के प्रकाशन के साथ ही साथ मैं एक आश्रम "श्री दुर्गा परिचर्याश्रम" की स्थापना कर रहा हूँ। जिसमें कि मन्त्रशास्त्र

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

एवं तन्त्रोक्त पद्धति के अनुसार विद्यार्थियों एवं सद् गृहस्थों को शिक्षा-दीक्षा एवं भोजन व निवास का प्रबन्ध रहेगा। वास्तव में अपने इस लुप्त प्राचीन महाविद्या के प्रचार एवं प्रसार की अपने इस स्वतन्त्र भारत में पूर्ण आवश्यकता है। प्राचीनकाल में जो भी वैज्ञानिक आविष्कार एवं आध्यात्मिक विकास एवं चमत्कार हुए हैं वे सब इसी प्राचीन विद्या के प्रभाव के कारण हुए हैं। शक्ति की महत्ता सदैव से रही है। जब भी देवताओं को संकट का सामना करना पड़ा है, तब २ उन्होंने भगवती की ही उपासना करके संकट से उद्धार पाये हैं, एवं विजय प्राप्त की है। इसी कारण आज अमेरिका आदि विदेशों में इस प्राचीन विद्या के महत्व को समझकर काफी प्रचार कर रहे हैं एवं काफी गुप्त सङ्गठन खोलकर इस विद्याका अनुभव प्राप्तकर रहे हैं। विस्तारमें इस विषय में श्री शिवनाथजी काटजू एडवोकेट से उनके "अमेरिका विषयक" लेख अथवा स्वयं व्यक्तिगत रूप से मिलकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसी हेतु मैंने जो भी इस मार्ग में अनुभव एवं साधना की है, उसे मैं चाहता हूँ कि अपने अवशेष जीवन में बतलाकर तब इस संसार को त्यागूँ।

अन्त में इस पुस्तक के प्रकाशन में स्वनामधन्य संतप्रवर श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी से जो उत्साह, प्रोत्साहन एवं कृपा मिली है, उसके हेतु मैं जीवन पर्यन्त उनका आभारी रहूँगा। आपने कृपा करके इसकी १००० प्रति निःशुल्क ही प्रकाशित करवाने की कृपा की है। इस पुस्तक के द्वारा जो धन-लाभ होगा वह इसी

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आश्रम के प्रबन्ध एवं भगवती पूजन में खर्च होगा। अतः इस पुस्तक के खरीदने एवं प्रचार में जो भी योग प्राप्त होगा उससे लोक-परलोक दोनों का ही लाभ है। इसके उपरान्त हमारे पास और भी जो अप्रकाशित अप्राप्य एवं दुर्लभ शास्त्रोक्त पद्धति एवं साहित्य है उसे भी समयानुसार आप पाठकों एवं भक्तजनों के प्रोत्साहन से प्रकाशित करेंगे।

दिनांक–१–१–६२

श्रीस्वामी जयदेव मिश्र 'जपाचार्य'
'संस्थापक'
श्रीदुर्गा परिचर्याश्रम प्रयाग, ११५
बासुकी (कलाँ) दारागञ्ज इलाहाबाद

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त्रिवेणी स्तोत्र भूमिका

तीर्थराज प्रयाग में जहाँ गङ्गा यमुना सरस्वती मिलती हैं उसे त्रिवेणी कहते हैं। त्रिवेणी का वर्णन वेदों में भी आता है। स्त्रियों का सौभाग्य भी वेणी में ही होता है। चोटी को तीन लट पृथक् करके गुहते हैं। पहिले तो वे तीनों पृथक्-पृथक् दीखती हैं, किन्तु गुहने पर एक छिप जाती है दो ही दिखायी देती हैं। इसी प्रकार गङ्गा, यमुना सरस्वती तीनों मिलने पर सरस्वती गुप्त हो जाती हैं गङ्गा यमुना की दो धारा ही दिखायी देती हैं।

यह पिण्ड तथा ब्रह्माण्ड त्रित्व पर ही अवलम्बित है। शरीर में भी इडा, पिङ्गला और सुषुम्ना जहाँ मिलती हैं, उसे त्रिवेणी कहते हैं। दोनों भौंहों के बीच में यह स्थान है। जहाँ ये मिलती हैं, उसे युक्त त्रिवेणी कहते हैं, जहाँ से फिर तीनों धारायें पृथक् होती हैं उसे मुक्त त्रिवेणी कहते हैं। कलकत्ते के पास गङ्गा यमुना सरस्वती तीनों धारायें फिर पृथक् होती है। वह स्थान भी त्रिवेणी के नाम से विख्यात है 'त्रिवेणी' नाम का वहाँ स्टेशन भी है। किन्तु प्राधान्य युक्तत्रिवेणी का ही है। जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड है। इसीलिये ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सत्व, रज, तम इनसे ही सृष्टि होती है। त्रिवेणी में आधिभौतिक, आधिदैविक, और आध्यात्म ये तीनों ही भाव हैं। त्रिवेणीदेवी से ही सृष्टि होती है। त्रिवेणी ही सृष्टि की रक्षा करती हैं और अन्त में त्रिवेणी ही सबका संहार करती हैं। विश्व की सृष्टि, स्थितिलय त्रिवेणी पर ही अवलम्बित है। त्रिवेणी की एक उपासना ही शक्ति की उपासना है। यही बात इस स्तोत्र में बतायी गयी है। यह ५४ श्लोकों का प्राचीन स्तोत्र बहुत ही दिव्य है, इसकी रचना कब हुई और

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

किसने की कुछ पता नहीं। किन्तु इसमें वर्णित भाव अतीव दिव्य हैं, त्रिवेणी के यथार्थ रूप को बताते हैं। मेरी पाठकों से प्रार्थना है, इन श्लोकों को कण्ठ का हार बनाकर अपने इहलोक परलोक को बनावें। जो लोग इन श्लोकों को कण्ठस्थ करके त्रिवेणीजी को नित्य सुनावेंगे, इनसे माँ त्रिवेणी की स्तुति करेंगे उन्हें मनो-वांछित फल अवश्य प्राप्त होंगे। अन्त में त्रिवेणी मैया के पाद-पद्मों में हमारी यही प्रार्थना है कि भूले भटके जो हम उनकी सन्तान हैं उन्हें सत्पथ पर चलावें।

संकीर्त्तन भवन
झूसी, प्रयाग
पौष० कृ० ६। २०१८ वि०

माँ त्रिवेणी का एक अल्हड़ सन्तान
प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीहरिः

श्री बदरीनाथ-दर्शन

(श्रीब्रह्मचारीजीका एक अपूर्व महत्वपूर्ण ग्रन्थ)

श्रीब्रह्मचारीजी ने अनेकों बार श्रीबदरीनाथजीकी यात्रा की है यात्रा ही नहीं की है, वे वहाँ महीनों रहे हैं उत्तराखण्ड के छोटे बड़े सभी स्थानों में वे गये हैं उत्तराखण्ड में कैलाश, मान-सरोवर, शतोपन्थ, लोकपाल और गोमुख ये पाँच स्थान इतने कठिन हैं कि जहाँ पहाड़ी भी जानेसे भयभीत होते हैं उन स्थानों में ब्रह्मचारीजी गये हैं वहाँ का ऐसा सुन्दर सजीव वर्णन किया है कि पढ़ते पढ़ते वह दृश्य आँखों के सम्मुख नृत्य करने लगता है। उत्तराखण्ड के सभी तीर्थों का इसमें सरस वर्णन है, सबकी पौराणिक कथाएँ हैं, किंवदन्तियाँ हैं,इतिहास है, यात्रावृत्त है, यात्रा सम्बन्धी जितनी उपयोगी बातें हैं, सभी का इस ग्रन्थ में समावेश है। बदरीनाथजी की यात्रा पर इतना विशाल महत्वपूर्ण ग्रन्थ अभी तक किसी भाषा में प्रकाशित नहीं हुआ। आप इस एक ग्रंथ से घर बैठे उत्तराखण्ड के समस्त पुण्यस्थलों के रोमांचकारी वर्णन पढ़ सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं। यात्रा में आपके साथ यह पुस्तक रहे तो फिर आपको किसी से कुछ पूछना शेष नहीं रह जाता लगभग सवा चार सौ पृष्ठ की सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४) रुपया मात्र है शीघ्र मँगावें दूसरा संशोधित संस्करण छप गया है।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीहरिः ॥

॥ अथ त्रिवेणी स्तोत्रम् ॥

श्रीवेणीमाधवायनमः ॥श्रीत्रिवेणीदेव्यैनमः॥

ॐ काराब्ज निवासमत्त मधुपामुद्यान पीठस्थितां ।
ॐ कारागण काम कल्पलतिकामोजीस्वनी मौषधीम् ॥
ॐ कारेश्वर केवल प्रिय सखी मोंकार नाद प्रियाम् ।
ॐ कार प्रभवां विचित्र विभवां देवीं त्रिवेणीं भजे ॥१॥

भावार्थ—जो ॐकार रूपी कमल बाटिका के पीठ पर मस्त भौरों की तरह निवास करती हैं, ॐकार के उपासकों की कामना सिद्ध करने के लिये कल्पवृक्ष के समान हैं, तेजोबर्धक औषधि के तुल्य हैं, ॐकारेश्वर (कृष्ण) की एकमात्र प्रियसखी हैं, जिन्हें ॐ कार शब्द प्रिय है, ॐ कार से जिनकी उत्पत्ति हुई है और जो विचित्र ऐश्वर्यशालिनी हैं, ऐसे त्रिवेणी देवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥१॥

C-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अद्वैतामभिवांछितार्थ फलदाम व्याहता मव्ययाम् ।
अष्टैश्वर्य करामनन्त जयदामब्जस्थितामक्षरीम् ॥
आब्धि ग्रासनुतामशेष जननी मर्काग्नि कोटिप्रभाम् ।
अज्ञानान्ध हरामपार करुणां देवीं त्रिवेणीं भजे ॥२॥

भावार्थ—जो अद्वैत स्वरूपा, मनोवांछित फलदायिनी, अव्याहत गतिवाली, अविनाशिनी, आठों सिद्धियों को देनेवाली, सदा विजय प्राप्त करानेवाली, कमल पर स्थित अक्षर स्वरूपा हैं, जिनकी स्तुति अगस्तजी किया करते हैं, जो जगज्जननी हैं करोड़ों सूर्य एवं अग्नि के समान चमकनेवाली हैं, अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करनेवाली हैं, और जो अपार करुणामयी हैं, ऐसे त्रिवेणी देवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२॥

आम्नायागम सेविताघि युगलामापीनुत्तुङ्गस्तनीम् ।
आपोज्योति रसाभिपूर्ण लहरी मानंद संधायिनीम् ॥
आधारामरुणामनेक कुशलामाकार संशोभिताम् ।
आदिक्षान्त समस्त वर्ण निलयां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३॥

भावार्थ—जिनके दोनों चरणों की सेवा वेद और तन्त्रशास्त्र किया करते हैं, स्तन स्थूल एवं उत्तुङ्ग हैं, जिनका जल निर्मल स्वादिष्ट तथा तरङ्गों से युक्त है, जो आनन्द देनेवाली हैं, सबको धारण करनेवाली हैं, जिनका वर्ण लाल है, जो अनेक कार्यों में कुशल हैं, जिनकी आकृति सुन्दर है, और जो 'अ' से लेकर 'क्ष' तक के सभी अक्षरों के आधार हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥३॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

इष्टानिष्ट विवर्जिता मिह पर स्वामैक्य सौख्य प्रदां ।
इच्छासिद्धि विलास वैभव परामिच्छा क्रिया संयुताम् ।।
इच्छा शक्ति धनुश्शराभि दधतीं मिन्द्रार्चिता मिंदिराम् ।
इष्टावाप्त वरिष्ठ वाक् प्रकरिणीं देवीं त्रिवेणींभजे ।।४।।

भावार्थ—जो अच्छे और बुरे अपने और पराये के भेदभाव से दूर हैं, तथा सुख प्रदान करानेवाली एकमात्र स्वामिनी हैं, इच्छा शक्ति विलास-वैभव से सम्पन्न यथेच्छ आचरण करनेवाली हैं, इच्छाशक्ति रूपी धनुष और बाण को धारण करती हैं, इन्द्र जिनकी पूजा करते हैं, जो धन तथा मनोकामना पूर्ण करती हैं, जिनकी वाणी बड़ी ही ओजस्विनी है, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ।।४।।

ईषत्स्मरे विराजमान वदना मीशान दैवार्चिताम् ।
ईशित्वादि समस्त सिद्धि सहिता मींकार वर्णात्मिकाम् ।।
ईशां काम कलां विशुद्धमनसां विश्वेश्वरीमीश्वरीम् ।
ईषंत्री सकलार्थ दीपन करीं देवीं त्रिवेणीं भजे ।।५।।

भावार्थ—जिनका मुख मन्द मन्द मुस्कान से सुशोभित है, शङ्कर जिनका पूजन करते हैं, जो 'ईशित्व' (सबको वश में रखना) आदि सम्पूर्ण सिद्धियों से युक्त हैं, जिनका स्वरूप ईंकार अक्षरमय है, जो सबकी स्वामिनी हैं, काम की कला हैं, पवित्र अन्तःकरण वाली हैं, विश्व की शासिका हैं, ईश्वरी हैं, तथा सकल पदार्थों को प्रकाशित करनेवाली, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ।।५।।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

उत्फुल्लारुण पद्मनेत्र युगला मुद्दण्ड दैत्यापहाम् ।
उद्योतोज्ज्वल तीर्थराज रमणी मुल्लास तेजोवतीम् ॥
उत्कर्षाभयदान पेशलकरा मुच्छ्वास शक्तिप्रदाम् ।
उर्वस्यार्चित पादुकां पर कलां देवीं त्रिवेणींभजे ॥६॥

भावार्थ—प्रस्फुटित लाल कमल के समान जिनके नेत्र हैं, जो उद्दण्ड दैत्यों को नाश करनेवाली हैं, प्रभा से विलसित हैं, तीर्थ-राज प्रयाग की प्रिया हैं, उल्लास और तेज से युक्त हैं, उत्कर्ष एवं अभयदान देने में सिद्धहस्त हैं, जीवनशक्ति प्रदान करनेवाली हैं, जिनके खड़ाऊँ की पूजा उर्वशी करती हैं तथा जो उत्कृष्ट कला स्वरूपा हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥६॥

ऊर्ध्वश्रोत परा सरां त्रिनयना मूर्ध्वस्वरा मूर्ध्वगाम् ।
ऊर्ध्वाश्वास सुषुम्नमार्ग गमना मूर्ध्वेज्वल ज्वालिनीम् ॥
ऊर्ध्वाधः परिपूर्णधाम लहरी मूर्ध्वप्रभां भास्वराम् ।
ऊर्ध्वस्थान निवासिनीं शुभ करीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥७॥

भावार्थ—जो ऊर्ध्वगामी प्रवाह से युक्त हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जिनका स्वर ऊर्ध्व है, जो ऊर्ध्वगामिनी हैं, ऊर्ध्व-उच्छ्वास एवं सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग से गमन करनेवाली हैं, ऊपर को उठने वाली भास्वर ज्वाला से दैदीप्यमान हैं, ऊपर और नीचे अत्यन्त तेज तरङ्गों से व्याप्त हैं, ऊर्ध्व कान्तिवाली हैं, जाज्वल्यमान् हैं, ऊर्ध्व स्थान में निवास करनेवाली हैं, तथा शुभ करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥७॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ऋक्सामैरभि वन्दितां ऋषिगणैर्ध्येयां जगत्मोहिनीम् ।
ऋत्विक श्रोत्रिय यज्ञ सेवित तरां ऋग्दुःख संहारिणीम् ॥
ऋग् घोरासुर मर्दिनीं ऋतुमतीं सिंहासनाधीश्वरीम् ।
ऋक्सामार्चित् पादपद्म युगलां देवीं त्रिवेणींभजे ॥८॥

भावार्थ—ऋग्वेद और सामवेद जिनकी अभिवन्दना करते हैं, ऋषिवृन्द जिनका ध्यान करते हैं, जो जगत् को मोह में डाल देती हैं, ऋत्विक एवं श्रोत्रिय लोग यज्ञ द्वारा जिनकी उपासना करते हैं, जो ऋचाओं द्वारा दुःख का संहार तथा भयङ्कर असुरों का मर्दन करनेवाली हैं, ऋतुमती हैं, सिंहासन की अधीश्वरी हैं, और जिनके चरणारविन्दों की पूजा ऋग्वेद एवं सामवेद किया करते हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥८॥

ॠत्य कल्पित नासिकां ॠजुकरां ॠङ्कारभूषोज्वलाम् ।
ॠदिव्यामृत पूर्ण हेम लहरीं ॠवर्ण सञ्चारिणीम् ॥
ॠकाराक्षर रूपिणी गुरुतरां ॠदीर्घ सारांगणाम् ।
ॠनित्यां ॠगणां भयापहरिणीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥९॥

भावार्थ—जिनकी नासिका ॠ अक्षर के समान हैं, कल्याण कारिणी हैं, जो ॠकार रूप आभूषण से प्रकाशमान हैं, ॠकार रूप दिव्य एवं अमृतपूर्ण स्वर्ण लहरी के समान हैं, ॠवर्ण के साथ संचरण करनेवाली हैं, ॠकार अक्षर स्वरूपा हैं, अतिशय विशाल हैं. दीर्घ ॠ कार की सार हैं, ॠ अक्षर में नित्य रूप से अवस्थित हैं, ॠ कार ही गण हैं, भय को दूर करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी का मैं बन्दना करता हूँ ॥९॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लृब्धद्रोह विनाश हेतु चतुरां लृ लॄ कपोलाक्षरां ।
लृत्त प्रेत पिशाच लुंठन करां लृ लॄ कला शोभिताम् ॥
लृप्तां लृप्त विहीन विद्रुम लतां लोकेषु विख्यातिनीम् ।
लृ लॄ निर्मित नीलकान्ति चिकुरां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१०॥

भावार्थ—जो ईर्ष्या और द्रोह को नष्ट करने में पटु हैं, जिन्हें कपोल से उच्चरित होनेवाले लृ और लॄ अक्षर प्रिय हैं, जिनके हाथ भूत, प्रेत और पिशाच के लूटने में दक्ष हैं, जो लृ और लॄ अक्षरों की कला से सुशोभित हैं, जो जगत् विख्यात हैं, जिनके केश लृ और लॄ अक्षरों की नीलकांति से परिपूर्ण हैं, ऐसे त्रिवेणी देवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥१०॥

लृकारां परम प्रकाश लहरीं लृकार मध्येस्थिताम् ।
लोभ क्रोध निराकरां सुरुचिरां लावण्य नीलालकाम् ॥
लीला लब्ध यशस्विनीं स्थिरतरां लृङ्कार नित्यार्चिताम् ।
लक्षार्क प्रतिम प्रदीप कलिकां देवीं त्रिवेणींभजे ॥११॥

भावार्थ—जो लृ अक्षर से युक्त हैं, महाप्रकाश की तरङ्ग रूप हैं, लृ कार के बीच में रहनेवाली हैं, लोभ और क्रोध का निवारण करनेवाली हैं, अत्यन्त सुंदरी हैं, घुँघराले तथा नीले रङ्ग के बालों से सुशोभित हैं, अपने लीलाओं के द्वारा यश प्राप्त करनेवाली हैं, अत्यन्त स्थिर रहनेवाली हैं, लृ कार से नित्य पूजित होने वाली हैं, तथा लाखों सूर्य के समान देदीप्यमान हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥११॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

एकप्राभव शालिनीं निज सुखामेकाग्र चित्तप्रदाम् ।
एकां निश्चल योगिनीमनुपमा मेकाक्षरां शाश्रिताम् ॥
एकाकार विराजमान तरुणी मेक प्रतापाज्वलाम् ।
एकाभां नवयावकांद चरणां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१२॥

भावार्थ—जो महा प्रभुता से सम्पन्न हैं, अपने आप आनंदित रहनेवाली हैं, चित्त को एकाग्र करनेवाली हैं, अकेली रहनेवाली हैं, निश्चल होकर योगाभ्यास करनेवाली हैं, जो अनुपम हैं, एकाक्षर के भाग पर आधारित हैं, एक रूप में सदा युवती हैं, अद्भुत प्रताप से युक्त हैं, विशिष्ट शोभावाली हैं, चरणों में महावर लगाये हुई हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥१२॥

ऐंकारांरुण वह्निचक्र निलया मैरावताधिष्ठिताम् ।
ऐंकारांकुर दीप्त काञ्चनलता मैंकार वर्णात्मिकाम् ॥
ऐंकाराम्बुधि चन्द्रिका मसुरहा मैंकार पीठस्थिताम् ।
ऐंकारासन गर्भिता नलशिखां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१३॥

भावार्थ—अग्नि समूहों को धारण करनेवाली ऐंकार के समान लाल, तथा ऐरावत पर आसीन ऐंकार के अंकुर के समान प्रकाशवती स्वर्णलता हैं, ऐंकार अक्षर स्वरूपा हैं, ऐंकार रूपी समुद्र में चाँदनी के समान, असुरों को नाश करनेवाली, ऐंकार की पीठ पर विराजमान, ऐंकार रूपी आसन पर स्थित अग्निशिखा हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥१३॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

औन्नत्याम्मभय प्रदान चतुरामौघत्रयाराधिताम् ।
औद्धत्यामघ शोषणां सुविदुषामोघोध बुद्धिप्रदाम् ॥
औद्गीतां सकलैः पुराण पुरुषैर्वेदै पदैस्स क्रमैः ।
ओंकाराक्षर राजराज्य वशगां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१४॥

भावार्थ--जो उन्नति और अभय प्रदान करने में चतुर हैं, गङ्गा, यमुना, सरस्वती जिनकी उपासना करती हैं, जो लोगों की उद्दण्डता और पापों का नाश करती हैं, विद्वानों को बुद्धि एवं आनन्द प्रदान करती हैं, वेद-पुराण जिनकी महिमा गाते हैं, जो ओंकार अक्षर मन्त्र की वशीभूत हैं। ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥१४॥

अंबाम्बर मध्य देश ललिता मंबात्रया राधिताम् ।
अंबोजोद्भव यागसिद्धवरदा मंभोज पत्रेक्षणाम् ॥
अंतर्ध्यान विधान तत्व विषदांमंगा सुधी मङ्गणाम् ।
अङ्गस्थामनुभूति भावन रतां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१५॥

भावार्थ—जो मध्य आकाश में शोभायमान होती हैं, तीनों महाशक्तियाँ जिनकी आराधना करती हैं, जो ब्रह्माजी के यज्ञ को सफल करती एवं वरदान देती हैं, जिनकी आँखें कमलपत्र के समान हैं, जो अन्तर्ध्यान होने की कला में निपुण हैं, जिनकी उपासना सुधीगण किया करते हैं, जो अनुभूति एवं ध्यान में लीन रहती हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की में वन्दना करता हूँ ॥१५॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अर्कामाल निरूपणाम निमिषा मध्यात्मविद्यां सुधाम् ।
आद्यामक्षतरामनुग्रहकरां क्षीराब्धि मध्यस्थिताम् ॥
अन्तर्याग तपः प्रसन्न सुमुखी मष्टाङ्ग योगीश्वरीम् ।
आचार्यामवधूतचर्य महिमां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१६॥

भावार्थ—जो सूर्य के समान हैं, आत्मचिन्तन में रत रहती हैं, जिनका पलकें नहीं गिरतीं, जो आध्यात्मविद्या की अमृत हैं, सबकी आदि हैं, धरती की धुरी हैं, दयामयी हैं, क्षीरसागर के मध्य में निवास करनेवाली हैं, यज्ञ और तप से प्रसन्न रहनेवाली हैं, अष्टाङ्ग योग (यम, नियम, आसन. प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि) की स्वामिनी हैं, अवधूताचार्य, सन्यासी लोग जिनकी महिमा गाते हैं, ऐसे त्रिवेणादेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥१६॥

कर्पूरागुरु कुंकुमाङ्कितकुचां कर्पूर वर्णस्थिताम् ।
कष्टोत्कृष्ट निकृष्ट कर्मदहनां कामेश्वरीं कामिनीम् ॥
कामाक्षीं करुणा रसार्द्र हृदयां कल्पान्तर स्थायिनीम् ।
कस्तूरी तिलकाभिराम निलयां देवीं त्रिवेणींभजे ॥१७॥

भावार्थ—जिनके स्तन कर्पूर अगर और केसर से अङ्कित हैं, जिनका वर्ण कपूर के समान शुभ्र हैं, जो कष्टकारक उत्कृष्ट एवं निकृष्ट कर्मों को जलानेवाली हैं, काम की ईश्वरी कामिनी हैं, कामाक्षी हैं, जिनका हृदय करुण रस से सराबोर है, जिनका कल्पान्तर होने पर भी नाश नहीं होता, जो कस्तूरी तिलक से सुशोभित तथा सुंदरता की धाम हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बंदना करता हूँ ॥१७॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

खस्थां खड्गधरां खरासुर हतां खट्वाङ्ग हस्तांखगाम् ।
खट्वस्थां खललोक नाशनकरां खर्वीं खचेन्द्रार्चिताम् ॥
खाकारां खग बाहनार्चितपदां खण्डेन्दु भूषोज्ज्वलाम् ।
ख व्याप्तां कलिदोष खंडनकरीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥१८॥

भावार्थ—जो आकाश में स्थित होती हैं, खड्ग को धारण करती हैं, दुष्ट असुरों को मारनेवाली हैं, खट्वांग नामक अस्त्र को हाथ में रखती हैं, आकाश में विचरण करनेवाली हैं, खट्वांग पर आसीन हैं, दुष्टों का नाश करनेवाली हैं, कद में छोटी हैं, गरुड़ द्वारा पूजित हैं, आकाश जैसी विस्तृत आकृति वाली हैं, ब्रह्मा से पूजित चरणोंवाली हैं, अर्धचन्द्र रूपी आभूषण से उद्भासित हैं, आकाश में व्याप्त हैं, तथा कलियुग के दोषों का नाश करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥१८॥

गायत्रीं गरुड़ध्वजां गगनगां गंधर्व गानप्रियाम् ।
गंभीरां गज-गामिनीं गिरिसुतां गंधाक्षतालंकृताम् ॥
गङ्गा गौतम गर्ग सन्नुतपदां गां गौतमीं गोमतीम् ।
गौरी गर्व गरिष्ठ यौवनवतीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥१९॥

भावार्थ--जो अपने गायकों (भक्तों) की रक्षा करती हैं, गरुड़ जिनका चिन्ह है, जो आकाशमें गमन करती हैं, जिन्हें गन्धर्वों का संगीत प्रिय है, जो गम्भीर हैं, हाथी के समान मन्द गति से चलती हैं, पर्वत की पुत्री (पार्वती) हैं, गन्ध अक्षतों से अलंकृत हैं, गङ्गा हैं, गौतम और गर्गमुनि से वन्दित चरणोंवाली हैं, गोस्वरूपा हैं, गौतमी हैं, गोमती हैं, गौरी हैं, और गर्व एवं गुरुता से परिपूर्ण जिनका यौवन है ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बंदना करता हूँ ॥१९॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

घण्टा शङ्खधरां घनस्तनभरां घंटा निनादप्रियाम् ।
घर्मघ्नां करुणाकटाक्ष लहरीं घोरासुरोच्चाटिनीम् ॥
घांघ्राणां घटिकां प्रसिद्ध घुटिकां घ्रूणांघ्रुणोचिद्घनाम् ।
घातां दुष्ट दुरासदां घनकचां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२०॥

भावार्थ—जो घण्टा और शङ्ख धारण करती हैं, जिनके स्तन सघन एवं स्थूल हैं, जिन्हें घण्टा का शब्द प्रिय है, जो पाप का नाश करनेवाली हैं, दया-दृष्टि की लहर फेंकनेवाली हैं, भयङ्कर राक्षसों का उच्चाटन करनेवाली हैं, जिनकी नासिका लम्बी है, जो ज्ञान स्वरूपा हैं, जिनके पास दुष्ट लोग नहीं पहुँच सकते और जिनके बाल सघन हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२०॥

ज्ञानाज्ञान विवर्द्धिनी गुणनिधिं श्रीराजराजेश्वरीम् ।
ज्ञानानन्द विचार मुक्तिफलदां ज्ञानेश्वरीं गोचरीम् ॥
ज्ञानाक्षीं सुजनां सुरासुर नतां प्रज्ञान दीपांकुराम् ।
ज्ञानाढ्यां कमलां कलंकरहितां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२१॥

भावार्थ—जो ज्ञान और अज्ञान को बढ़ानेवाली हैं, गुणों की निधि हैं, राजाओं के राजा की भी शासिका हैं, ज्ञान आनन्द, विवेक एवं मोक्ष को देनेवाली हैं, ज्ञानेश्वरी हैं, इन्द्रियगम्य हैं, ज्ञान की नेत्र हैं, सुन्दर व्यक्तित्व से पूर्ण हैं, सुर तथा असुरों की आराधनीया हैं, प्रज्ञान रूपी दीपक की ज्योति हैं, ज्ञान से सम्पन्न हैं, लक्ष्मी स्वरूपा एवं कलङ्क से रहित हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२१॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चन्द्रार्काग्नि लसत्रिनेत्र कलितां चक्राधिराजस्थिताम् ।
चन्द्राग्निस्तन भारशोभनवतीं चंद्रार्क ताराङ्किनीम् ॥
चेतः सद्मनि योगिनां विहरिणीं चित्सन्न मोदप्रदाम् ।
चक्राधीश्वर सद्मम‍ध्यनिलयां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२२॥

भावार्थ—जो चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि रूपी तीन नेत्रों से सुशोभित हैं, तीर्थराज में स्थित हैं, चन्द्र और अग्नि रूपी स्तनों के भार से सुशोभित हैं, चन्द्र सूर्य और तारा के चिन्हों से युक्त हैं, योगियों के चित्त में विहरण करनेवाली हैं, ज्ञान तथा आनन्द को देनेवाली और तीर्थराज प्रयाग के भवन में निवास करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२२॥

छायामात्मविदां चराचर गतां छत्राधिराजेश्वरीम् ।
छंदोभिर्विविधैर्वरैस्सहचरां चर्चा भयच्छेदिनीम् ॥
छन्नास्व प्रभया समस्त जगतां चामीकरा भासिनीम् ।
छिन्नामासुर कोटि कोटि शिरसां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२३॥

भावार्थ—जो आत्मज्ञानियों की छाया हैं, चराचर में व्याप्त हैं, छत्र सुशोभित साम्राज्ञी हैं, विविध प्रकार के उत्तम छन्दों के साथ चलनेवाली हैं, स्मरणमात्र से भय का नाश करनेवाली हैं, अपनी प्रभा से सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करनेवाली हैं, सुवर्ण के समान चमकनेवाली हैं, और करोड़ों असुरों के सिरों को छेदन करनेवाली हैं, उन त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२३॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जम्बूद्वीप निवासिनीं जयकरीं जाड्यान्धकारापहाम् ।
जल्पांजन्म विवर्जितां जलधिजां ज्वाला जगज्जीवनीम् ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिषु स्फुटतरां ज्वालामुखींजानकीम् ।
जंभाराति समर्चिताङ्घ्रि युगलां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२४॥

भावार्थ—जो जम्बूद्वीप की निवासिनी हैं, जय प्रदान करने वाली हैं, अज्ञानता रूपी अन्धकार का नाश करनेवाली हैं, स्पष्ट वक्ता हैं, जन्म-मरण से रहित हैं, समुद्र में उत्पन्न हैं, ज्वाला स्वरूपा हैं, संसार को जिलानेवाली हैं, जागृति स्वप्न एवं सुषुप्ति तीनों अवस्थाओं में प्रकाशित होनेवाली हैं, ज्वालामुखी हैं, जानकी हैं, और इन्द्र जिनके चरणकमलों की पूजा करते हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२४॥

ॐकारामुष लोचनामुलमुलां जाड्यान्ध कारापहाम् ।
ॐ ॐकार उषध्वजाम्मुनमनां जालंध्र पीठस्थिताम् ॥
ॐ ॐ ॐ कृत नुपुरां चितपदां जाज्वल्य मानप्रभाम् ।
कान्तस्थां झटिति प्रसाद करणीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥२५॥

भावार्थ—जो आकार स्वरूपा हैं, जिनके नेत्र दीप्तिमान हैं, जो उल-उल शब्द से युक्त हैं, अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करनेवाली हैं, ॐकार जिनका ध्वज है, जो उन-उन शब्द से युक्त हैं, जालन्ध्र के पीठ पर स्थित हैं, ॐ ॐ ॐ शब्द करनेवाली पायल से जिनके चरण सुशोभित हैं, जिनकी कान्ति जाज्वल्यमान है, जो रमणीय वाहन पर स्थित हैं, जो शीघ्र प्रसन्न होनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२५॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

या योकार विराजितां ययनखाँ निर्मानसीं निष्क्रियाम् ।
निंद्रां निर्विषयां चिदम्बर समां निर्मत्सरां निर्ममाम् ॥
निर्द्वन्दां प्रथमां प्रबंधकरणीं पञ्चाक्षरीं पार्वतीम् ।
निश्चिन्तां विमलां नरेन्द्रविनुतां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२६॥

भावार्थ—जो 'या' 'या' के स्वरूप में विराजमान हैं, 'य' और 'य' के समान नखवाली हैं, मन की (चञ्चल) वृत्ति से रहित हैं, क्रिया से शून्य हैं, निद्रा और विषयों से रहित हैं, चित्स्वरूपा हैं, आकाश के समान स्वच्छ हैं, ईर्ष्या एवं ममता से रहित हैं, निर्द्वंद्व हैं, आद्याशक्ति हैं, सबका प्रबन्ध करनेवाली हैं, "नमःशिवाय" के पञ्चाक्षर मन्त्र में निवास करनेवाली हैं, पार्वती हैं, निश्चिन्त हैं, राजाओं से स्तुत्य हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२६॥

टंकाभासुर भूभृतां विजयिनीं विश्वाधिकां सौख्यदां ।
विख्यातां वरवीर वाग्भवलतां ब्राग्बोधिनी वासुकीम् ॥
विश्वामित्र समर्चितां विषहरां विद्याश्रितां वैष्णवीम् ।
वीरामर्जुन भीमधर्म विनुतां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२७॥

भावार्थ—जो केवल शब्द नाद से राक्षसों और राजाओं पर विजय प्राप्त करनेवाली हैं, विश्ववरेण्य हैं, सुखदायिनी हैं, प्रसिद्ध हैं, श्रेष्ठ वीरों की वाणी रूपी लता हैं, वाणी का बोध करानेवाली हैं, वासकी हैं, विश्वामित्र से पूजित हैं, विषों का हरण करनेवाली हैं, विद्या से सेवित हैं, वैष्णवी हैं, वीर अर्जुन और भीम के धर्म से समन्वित हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ॥२७॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

टंताराधिप सेवितांघ्रि युगलां बैकुण्ठ लोकाधिपाम् ।
विज्ञानां विरजां विशाल महिमां वीणाधरां वारुणीम् ॥
वाणीवासव वन्दितां सुखकरां वाग्बोधिनीं वामनाम् ।
कालां काम कलावतीं कविनुतां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२८॥

भावार्थ—जिनके दोनों चरणों की सेवा चन्द्रमा करते हैं, जो वैकुण्ठलोक की स्वामिनी हैं, विज्ञान स्वरूपा हैं, कालुष्य से रहित हैं, जिनकी महिमा अपार है, जो वीणा को धारण करती हैं, वरुण की प्रिय हैं, सरस्वती एवं इन्द्र से वन्दित हैं, सुख देनेवाली हैं, वाणी का बोध करानेवाली हैं, सुंदरी हैं, काल स्वरूपा हैं, कामकला में निपुण हैं, तथा कवियों द्वारा स्तुत्य हैं, ऐसे त्रिवेणी देवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥२८॥

डाकिन्यादि भिरावृतां धवलिनीं डाल्यादि संसेविताम् ।
रक्षो द्रावणकारिणीं दनुजहां ॐकारिणी डामरीम् ॥
दीर्घाङ्गी दिविजां दिनेश विनुतां दीनार्तिविच्छेदिनीम् ।
दुर्गां दुर्गति नाशिनीं दुरति हां देवीं त्रिवेणींभजे ॥२९॥

भावार्थ—जो डाकिनी आदि से घिरी रहती हैं, जिनका वर्ण उज्वल है, डाला (मातृकागण) आदि जिनकी सेवा करती हैं, जो राक्षसों का संहार करती हैं, दानवों का विनाश करती हैं, ॐकार शब्द का उच्चारण करती हैं, डामर (तन्त्रशास्त्र) जिन्हें प्रिय है, लम्बे अङ्गोंवाली हैं, दिव्या हैं, सूर्य जिनकी प्रार्थना करते हैं, जो दीन दुखियों की पीड़ा हरनेवाली हैं, दुर्गा स्वरूपा दुखों का नाश करनेवाली हैं, तथा पापों को भञ्जन करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥२९॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ढ़क्कानाद विनोदिनीं विभवदां दारिद्र्य संहारिणीम् ।
ढिं ढिं भूषण भूषितां ढ़मढ़मा ढंकार वर्णात्मिकाम् ॥
ढ़ं ढ़ां ढिं ढ़िम वर्तिनीं ढ़ल ढ़लां धम्मिल्ल संशोभितां ।
सायुज्यां पुरुषार्थ साधनकरीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥३०॥

भावार्थ—जो डमरू के शब्द से मनोरञ्जन करनेवाली हैं, धन देनेवाली हैं, दरिद्रता का नाश करानेवाली हैं, ढ़िम ढ़िम शब्द करनेवाले आभूषणों से विभूषित हैं, ढ़म ढ़मा ढ़म शब्द करनेवाले अक्षरों की आत्मा हैं, ढ़ं ढ़ां ढ़िं ढ़िं शब्द के साथ नृत्य करनेवाली हैं, जूड़े से सुशोभित हैं, और सायुज्य मोक्ष एवं पुरुषार्थ को सिद्ध करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३०॥

णकारां नवनान्त दिव्य हृदयां नीलाम्बरालंकृताम् ।
नीलां नीरज लोचनां निगमगां नीरेश्वरीं नीरजाम् ॥
नीलाङ्गी नल सेवितां कुवलयां कोलाहलां कोमलाम् ।
नीलाराधित पाद पङ्कज युगां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३१॥

भावार्थ—जिनके नाम में 'ण' या 'न' अक्षर और 'त' एवं 'व' अक्षर जुड़े हुए हैं, जिनका हृदय दिव्य है, जो नीलवस्त्र से सुशोभित हैं, जिनका वर्ण नील है, नेत्र कमल के समान हैं, वेदों में जिनकी गति है, जो जल की स्वामिनी है, जलसे उत्पन्न हैं, नल नामक (बन्दर) से सेवित हैं, कमल के समान हैं, कोलाहल प्रिय हैं, कोमल हैं, और जिनके दोनों चरणारविन्दों की सेवा नील नामक (बन्दर) ने की थी, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३१॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तारां ताण्डव साक्षिणीं तनुलतां तंत्रत्रयाधीश्वरीम् ।
तन्वीं तत्व निधिं तपः फलकरीं ताम्बूल राजन्मुखीम् ।
तत्त्वज्ञां तरुणीं तरान्तर गतां तापत्रयध्वंसिनीम् ।
ताराहार विराजित स्तन तलां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३२॥

भावार्थ—जो तारण (उद्धार) करनेवाली स्वयं तारादेवी हैं, ताण्डव नृत्य की साक्षिणी हैं, सुन्दर शरीरवाली हैं, तीनों तन्त्र (तन्त्र मन्त्र यन्त्र शास्त्र) की अधीश्वरी हैं, तन्वी हैं, तत्व की निधि हैं, तपस्या का फल देनेवाली हैं, जिनका मुख ताम्बूल से सुशोभित है, जो तत्व-ज्ञात्री हैं, तरुणी हैं, तीनों प्रकार के (दैहिक, दैविक, भौतिक,) तापों का ध्वंस करनेवाली हैं, और जिनके स्तन तट पर ताराओं की माला विराजमान हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता ॥३२॥

थथत्थैय थथत्थैय शब्द रचनैर्माङ्गल्य गीतोज्वलैः ।
सौंदर्ध्याप्स रसाल सन्मृग दृशां नृत्यै विराजत्सभाम् ॥
थं तत्वावरणां तटोपतटिनीं तत्सिद्धिदां तारिणीम् ।
चातुर्यां परिपूर्ण चन्द्र वदनां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३३॥

भावार्थ—"थ थ थैय्या" इस प्रकार के शब्दों से ताल देकर माङ्गलिक गीत गाती एवं नाचती हुई सुन्दरी अप्सरायें जिनकी सभा की शोभा बढ़ाती हैं, जो तत्वज्ञान से आवृत हैं, तटों एवं उपतटों से युक्त हैं, सिद्धि की दात्री हैं, तारण करनेवाली हैं, चतुरता से परिपूर्ण हैं, तथा चन्द्रमुखी हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३३॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दक्षां दैन्य निवारिणीं दुरुगला दक्षेश्वरध्वंसिनीम् ।
दिव्यां द्रव्य समृद्धदां दिनमणि द्रुतां दुराधर्षिणीम् ॥
दीक्षां दानव दाहिनीं समधियां दिव्याम्बरालंकृताम् ।
दौहित्री-दुहितां द्यु तिं त्रिपथगां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३४॥

भावार्थ—जो दक्ष हैं, दीनता का निवारण करनेवाली हैं, दक्ष के यज्ञ का ध्वंस करनेवाली हैं, दिव्या हैं, धन समृद्धि देनेवाली सूर्य के समान प्रचंड हैं, दीक्षा स्वरूपा हैं, दानवों को जलानेवाली हैं, समभाव रखनेवाली हैं, दिव्यवस्त्र एवं अलङ्कारों से सुसज्जित हैं, दौहित्री हैं, दुहिता हैं, कान्ति स्वरूपा हैं, और तीनों मार्गों पर चलनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३४॥

धन्यां धन्यतरां धनाधन करां धर्म्मार्थ कामप्रदाम् ।
धर्मज्ञां धरणीं धनाधिप नुतां धर्मस्थितां धीमतीम् ॥
धर्माधर्म फलप्रदां धनवतीं धीराध्वनिं धीमिताम् ।
धारा ध्रां ध्रुव पूजितां ध्रुवपदां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३५॥

भावार्थ—जो धन्य हैं, धन्य से बढ़कर हैं, धन और धनाभाव दोनों ही करनेवाली हैं, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्रदान करनेवाली हैं, धर्मज्ञा हैं, धारण करनेवाली पृथ्वी स्वरूपा हैं, कुवेर से पूजित हैं, धर्म में स्थित हैं, बुद्धिमती हैं, धर्म और अधर्म के फलों को देने वाली हैं, धनवती हैं, धीमानों की गम्भीर ध्वनि हैं, प्रखर धारा से युक्त हैं, ध्रुव से पूजित हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३५॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नादा तां नवयौवनां नवरसां नादप्रियां नादिनीम् ।
नाना वेष धरां नगाधिप नुतां नारायणीं नर्मदाम् ॥
नागेन्द्रा भरणां नदी नद नुतां नित्यां निधिं निर्मलाम् ।
निक्षेपां निखिलां निजां निरवधीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥३६॥

भावार्थ—जिनके अन्त में नाद है, जो नवयौवना हैं, नवों रसोंवाली हैं, नाद जिन्हें प्रिय हैं, जो नाद से युक्त हैं, नाना प्रकार के वेश धारण करनेवाली हैं, नागराज से स्तुत हैं, नारायणी हैं, विनोद करनेवाली हैं नागों के आभूषण से सुशोभित हैं, नदियों और नदों से स्तुत हैं, नित्य हैं, निधि हैं, निर्मल हैं, निक्षेप [धरोहर] स्वरूप हैं, सर्वस्वरूपा हैं, स्वयं सब कुछ हैं निःसीम हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३६॥

पश्यन्तीं पर देवतां पुरहरां पापौध विध्वंसिनीम् ।
प्राणां पद्मधरां प्रयाग निलयां पाकारि संसेविताम् ॥
प्रसन्नां प्रणवां पुराण पुरुषां प्राणेश्वरीं पद्मिनीम् ।
बन्धूक प्रसवारुणां वरधरां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३७॥

भावार्थ—जो दूसरे देवताओं को भी देखती हैं, त्रिपुरासुर का हरण करनेवाली हैं, पाप समुह का विध्वंस करनेवाली हैं, प्राण स्वरूपा हैं, कमलधारिणी हैं, प्रयाग में निवास करनेवाली हैं, इन्द्र से परिसेवित हैं, प्रत्यक्ष हैं, प्रणव हैं, पुराणपुरुष हैं, प्राणेश्वरी हैं, पद्मिनी हैं, बन्धूक (गुलदुपहरिया फूल के समान लाल हैं, और वर नामक अस्त्र धारण करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३७॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

फालाचाक्षीं भ्रमरां भ्रमापहरिणीं भ्रान्ताज्ञ दूरी कृताम् ।
भासांभास्कर सेवितां फणिधरां फाकार तत्त्वप्रभाम् ॥
भ्रष्ट क्लेश विनासिनीं भुगभुगां भोगप्रदां भोगिनीम्
भोगीन्द्रा भरणां फलाफल करां देवीं त्रिवेणींभजे ॥३८॥

भावार्थ—जिनके नेत्र विशाल हैं, जो भ्रमर के समान हैं, भ्रम का निवारण करनेवाली हैं, अज्ञानता को दूर करनेवाली हैं, कान्तिमती हैं, सूर्य से सेवित हैं, सर्प धारण करनेवाली हैं, 'फ' अक्षर जैसी आकृति वाली हैं, तत्वों से जगमगाती हैं, क्लेश का विनाश करनेवाली हैं, भोग प्रदान करनेवाली हैं, भोगिनी हैं, साँपों के आभूषणों से विभूषित हैं, एवं सुफल तथा कुफल दोनों को देनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३८॥

बालां वाम शशाङ्क वद्ध मुकुटां पद्मासना धिष्ठिनीम् ।
भेदाभेद विभेद भेदनकरीं बाधापहा ब्राह्मणीम् ॥
बोधाबोध वलां बुधार्चित पदां बुद्धिप्रदां बोधिनीम् ।
ब्रह्मस्त्रां बगलां बलप्रमथिनीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥३९॥

भावार्थ—जो बाला हैं, जिनका मुकुट वक्रचन्द्र से सुशोभित हैं, जो पद्मासन पर विराजमान हैं, जो भेदाभेद को मिटानेवाली हैं, बाधाओं को दूर करनेवाली हैं, ब्राह्मणी हैं, बोधाबोध तथा बल स्वरूपा हैं, जिनके चरणों की पूजा बुद्धिमान लोग किया करते हैं, जो बुद्धि देनेवाली हैं, बोध करानेवाली हैं, ब्रह्मास्त्र हैं, बगलामुखी देवी हैं, और दुष्ट बल का मन्थन करनेवाली हैं, ऐसे ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥३९॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGango

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भव्यां भक्तिवशां भवाब्धि तरणीं भामां भवानींभवाम् ।
भद्रा भाग्यवरां भयापहरणीं भक्तिप्रियां भारतीम् ॥
भाषां भानुमतीं भगात्त निहतां भ्रांतां जगद्भावनाम् ।
भर्गा भार्गव सन्नुता भगवतीं देवीं त्रिवेणींभजे ॥४०॥

भावार्थ—जो भव्य हैं, भक्ति से वशीभूत होनेवाली हैं, संसार रूपी सागर पार करने के लिये नौका के समान हैं, भामा हैं, संसार की भवानी हैं, भद्रा हैं, उत्तम भाग्यवाली हैं, भय का अपहरण करनेवाली हैं, भक्तिप्रिय हैं, भारती हैं, भाषा हैं, भानुमती हैं, इन्द्र कर्मों को और संसार के भ्रान्त भावनाओं को निहत करनेवाली हैं, तेज स्वरूपा हैं, और परशुरामजी से स्तुत हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४०॥

मायां मंगलदायिनीं मनसिजां माहेश्वरीम् माधुरीम् ।
माहेन्द्री मकरध्वजां मधुमतीं मन्दस्मितोद्यन्मुखीम् ॥
मुक्तां मा मदलालसां मलयजां मायावतीं मानिनीम् ।
मीनाक्षीं महतीं महेश्वरनुतां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४१॥

भावार्थ—जो माया हैं, मङ्गलदायिनी हैं, मन से उत्पन्न होने वाली हैं, शिव की प्रिया हैं, माधुरी हैं, इन्द्राणी हैं, मकरध्वजा हैं, मधुमती हैं, जिनका मुख मन्द मुस्कान से सुशोभित है, जो मुक्ता स्वरूपा हैं, लक्ष्मी हैं, मदलालसा हैं, मलयपर्वत से उत्पन्न है, मायावती हैं, मानिनी हैं, मछली के समान नेत्रों वाली हैं, महान हैं, और शिव से स्तुत हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४१॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यात्रा सिद्धिकरीं यशः सुखकरीं यात्रोत्सवा यातुनाम् ।
यज्ञाङ्गां यमसन्नुतां यतनदीं यज्ञार्चितां योगिनीम् ।
यामा यज्ञ समर्चितां यतिनतां यंत्रस्थितां यामिनीम् ॥
यत्नायत्न कृताधमारि विनुतां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४२॥

भावार्थ—जो यात्रा को सुफल बनानेवाली हैं, यश और सुख प्रदान करनेवाली हैं, यात्रा में उत्सव प्रदान करनेवाली हैं, यज्ञ के अङ्ग स्वरूपा हैं, यमराज से भली-भाँति स्तुत हैं, नदियों का भली-भाँतिं संयमन करनेवाली हैं, यज्ञ में पूजित होनेवाली हैं, यज्ञों द्वारा पूजित हैं, साधुओं के द्वारा नमस्कृत हैं, रात्रि में यंत्र पर स्थित हैं, (तन्त्रशास्त्र के अनुसार यन्त्र पर स्थित) और यत्नपूर्वक 'या' लीला से नीचे दिखाये हुए शत्रु द्वारा प्रणत हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४२॥

राज्ञी राजसुपूजितां रघुनतां रामां रमां राकिनीम् ।
राकाचन्द्रमुखीं रसां रसवतीं राज्यप्रदां रागिणीम् ॥
राधा रक्षणतत्परां रविनुतां रंभां रथान्तः स्थिताम् ।
राधा रत्न किरीट कुण्डलधरां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४३॥

भावार्थ—जो राजा-रानियों से सुपूजित हैं, रघु से स्तुत हैं, रामा हैं, लक्ष्मी हैं, पूर्णिमा की रात्रि को चाहने वाली हैं, पूर्णिमा के चन्द्रमा के समान सुखवाली हैं, पृथ्वी स्वरूपा हैं, रसवती हैं, राज्य देनेवाली हैं, रागिणी हैं, राधा की रक्षा करने में तत्पर रहनेवाली हैं, सूर्य से स्तुत हैं, हाथी से युक्त रथ पर स्थित हैं, और रत्न एवं रत्न से भिन्न वस्तु का मुकुट तथा कुंडल धारण करनेवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४३॥

-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लक्ष्मी लक्षणलक्षितां लवलवा लाक्षारुणांघ्रिद्वयाम् ।
लक्ष्यां लक्ष्मण सेवितां लघुतरां लास्यप्रियां लाकिनीम् ।
लक्ष्यार्थां ललितां लसत्कुचभरां तन्वीं लघुश्यामलाम् ।
लावण्यांलय वर्जितां सुललनां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४४॥

भावार्थ—जो लक्ष्मी के लक्षणों से सम्पन्न हैं, जिनके दोनों चरण महावर के समान लाल हैं, जो देखने योग्य हैं, लक्ष्मण द्वारा सेवित हैं, अत्यन्त सूक्ष्म हैं, नृत्य प्रिय हैं, योगिनी हैं, प्रयोजन सिद्ध करनेवाली हैं ललित हैं, कुचों के भार से शोभायमान हैं, सूक्ष्मा हैं, किञ्चित श्यामवर्णा हैं, सौन्दर्यमयी हैं, और नाश से रहित हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४४॥

वाशिष्ठां वसुधां वरां वसुमतीं वागर्थ विज्ञानदाम् ।
वाराहीं वरुणां वराभयकरां वागीश्वरीं वाग्भवीम् ॥
वश्याकर्षण वाग्विलास करणीं वाक् सिद्धिसंपत्करीम् ।
वामाक्षी वरदां वदान्य विभवां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४५॥

भावार्थ—जो वशिष्ठजी से स्तुत हैं, पृथ्वी स्वरूपा हैं, वसुमती हैं, वाणी, अर्थ तथा विज्ञान को देनेवाली हैं, वाराह रूपधारी विष्णु की शक्ति हैं, वरुणा हैं, वर और अभय नामक अस्त्रों को हाथों में धारण करनेवाली हैं, वाणी की ईश्वरी हैं, वाणी से उत्पन्न होनेवाली हैं, वशीकरण, आकर्षण तथा वाणी का वैभव प्रदान करनेवाली हैं, वाक्‌सिद्धि एवं सम्पत्ति देनेवाली हैं, वामाक्षी हैं, वर देनेवाली हैं, महादानी हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४५॥

-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGang

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्यामाचक्र धरां शशांकवदनां शत्रु क्षयां शारदाम् ।
शास्त्रां शास्त्रकरां शमाशम करां शंखेन्दु कुन्दोज्वलाम् ॥
शातां घ्रांशवरीं शताक्षरमयीं शेषादि संसेविताम् ।
शंकाटंक विदारिणीं शशिकलां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४६॥

भावार्थ—जो श्यामा हैं, चक्र धारण करनेवाली हैं, (या मन्त्रशास्त्र के अनुसार चक्रपूजन में बैठनेवाली हैं) चंद्रमुखी हैं, शत्रुओं का क्षय करनेवाली हैं, सरस्वती हैं, शास्त्र स्वरूपा हैं, स्वयं शास्त्रों को बनानेवाली हैं, शान्ति और अशान्ति दोनों ही उत्पन्न करनेवाली हैं, शङ्ख, चन्द्रमा एवं कुन्द पुष्प के समान उज्वल हैं, शान्त हैं, शताक्षरमयी हैं, शेष आदि से संसेवित हैं, शङ्काओं का उन्मूलन करनेवाली हैं, और चन्द्रमा की कला के समान हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥४६॥

षड्योगैर्विहितां षड्र्थ सहितां षाड्गुण्य संभाविताम् ।
षड्चक्रोर्ध्वगतां षडघ विनतां षट्कूल मध्यस्थिताम् ॥
षट्कर्मा तुरतां षडूर्मिरहितां षड् दर्शनाधिष्ठिताम् ।
षड्योगिन्याभि सेविताधियुगलां देवीं त्रिवेणींभजे ॥४७॥

भावार्थ—योगाभ्यास से प्रयुक्त छः तरीकों से जिनकी उपासना की जाती है, जो छः प्रकार के अर्थों से युक्त हैं, षड्गुणों (उपाय, सन्धि आदि) से सम्मानित हैं, षट्चक्र (मूलाधार, अधिष्ठान आदि) के द्वारा ऊर्ध्वगामिनी हैं, छः कूलों के मध्य में (गङ्गा + जमुना + सरस्वती = २ × ३ = ६) स्थित हैं, षट्कर्मों (मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण) के करने में व्यग्र रहती हैं, छः उर्मियों (भूख, प्यास आदि से) रहित हैं, छः दर्शनों (सांख्य, वेदान्त, आदि) की आधार शिला

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

४५८४९

है, और छःहों योगिनियाँ जिनके चरणों की सेवा निरन्तर करती रहती हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ।।४७।।

सर्वज्ञां सकलार्थदां समरसां सौभाग्यदां स्वामिनीम् ।
सर्वानन्दमयीं समस्त जननीं सन्मोहिनीम् सुन्दरीम् ।।
स्वस्थां सर्वफलप्रदां समयिनीं सौभाग्य विद्येश्वरीम् ।
साकारां समयेश्वरीं सुमनसां देवीं त्रिवेणींभजे ।।४८।।

भावार्थ—जो सर्वज्ञा हैं, सभी प्रयोजनों को सिद्ध करनेवाली हैं, एक रसवाली हैं, सौभाग्य देनेवाली हैं, स्वामिनी हैं, सबको आनन्द देनेवाली हैं, सबकी जननी हैं, सबको मोहित करनेवाली हैं, सुन्दरी हैं, स्वस्थ हैं, सभी फलों की दात्री हैं, समय की अपेक्षा करनेवाली हैं, सौभाग्य और विद्या की ईश्वरी हैं, साकार हैं, समयेश्वरी हैं, और सुन्दर मनवाली हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ।।४८।।

हव्याज्यैरभिपूजितां हलधरां हंक्षस्थलाधीश्वरीम् ।
हंसा हंस गतिं हतासुर गतिं हस्तीन्द्र कुम्भस्तनीम् ।।
हस्ते पुस्तक धारिणीं हरिहर ब्रह्मात्मिकां हस्तिनीम् ।
हस्तीन्द्रानन् वन्दितांघ्रियुगलां देवीं त्रिवेणींभजे ।।४९।।

भावार्थ—हवनीय घृतों से जिनकी पूजा की जाती है, जो हल को धारण करनेवाली हैं, 'ह' और 'क्ष' अक्षरों के स्थान की अधीश्वरी हैं, हंस और हंस से भी इतर जिनकी गति है, जो असुरों की गति को विनष्ट करनेवाली हैं, गजराज के कुम्भस्थल के समान जिनके स्तन हैं, जो हाथ में पुस्तक धारण किये हुई हैं, ब्रह्मा, विष्णु एवं शङ्कर को भी अपने हाथों में लिये हुए हैं, गणेश

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जिनके दोनों चरणों की वन्दना करते हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ।।४९।।

लं तत्वार्चित पादपद्म युगलां लक्ष्यागमार्थानुगाम् ।
लक्ष्यालक्ष्य विलक्ष्य लक्षणवतीं लक्ष्यार्थ संसिद्धिताम् ।।
लीलालोल विलास कज्जलसन्नेत्र त्रयां चिन्मयीं ।
लाकारां शरदेन्दु सुन्दरमुखीं देवीं त्रिवेणींभजे ।।५०।।

भावार्थ – 'लं' तत्व से जिनके दोनों चरणारविन्दों की पूजा की जाती है, लक्ष्यशास्त्र में जिनकी प्रवृत्ति है, जो लक्षणा के योग्य, लक्षण के न योग्य और विशिष्ठलक्षण के योग्य लक्षणों से समन्वित हैं, लक्ष्य, अर्थ की सिद्धि देनेवाली हैं, जिनके तीनों नेत्र लीला से चञ्चल और विलास एवं काजल से सुशोभित हैं, जो चित्स्वरूपा हैं, 'ल' अक्षर की आकृति जैसी हैं, और शरच्चन्द्र के मुख के समान हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ।।५०।।

क्षत्रां क्षात्र विशारदां क्षतधरां क्षौमांबरालंकृताम् ।
क्षुद्रोपद्रव नाशिनीं क्षयहतां क्षामापहां क्षेमदाम् ।।
क्षुत्ृष्णापहतां क्षितीश विनुतां क्षेत्रां क्षितिक्षेत्रगाम् ।
क्षेत्रज्ञां सुगमार्क्षवर्णां पृथिवीं देवीं त्रिवेणींभजे ।।५१।।

भावार्थ —जो क्षात्र धर्म का अवलम्बन करनेवाली हैं, युद्ध विद्या में निपुण हैं, घावों को धारण करनेवाली हैं, रेशमी वस्त्र से अलंकृत हैं, क्षुद्रों द्वारा किये हुए उपद्रवों का नाश करनेवाली हैं, क्षय और क्षीणता को दूर करनेवाली हैं, कल्याण करनेवाली हैं, भूख प्यास को मिटानेवाली हैं, राजाओं से नमस्कृत हैं, क्षेत्र

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

स्वरूपा हैं, पृथ्वी स्वरूपा हैं, क्षेत्रगामिनी हैं, क्षेत्र को जाननेवाली हैं, और धरती के धुरी के समान हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥५१॥

अं आ दिव्य शिरोमुखाब्ज ललितां 'इ' 'ई' सुनेत्रां उ 'ऊँ'।
कर्णां 'ऋ' 'ॠ' सुनासिकासुरचना 'ऌ' 'ॡ'कपोलद्वयाम् ॥
'ए ऐ' ओष्ठ युगां परात्परतरां 'ओ औ' सुदन्तोज्वलाम् ।
अ मूर्ध्वांकलितां असर्ग रसनां देवीं त्रिवेणीभजे ॥५२॥

भावार्थ—जिनके 'अ' और 'आ' दिव्य मस्तक, 'उ' और 'ऊ' कान हैं, 'ऋ' और 'ॠ' सुडौल एवं सुन्दर नाक हैं, 'ऌ' और 'ॡ' दोनों गाल हैं, 'ए' और 'ऐ' दोनों ओठ हैं, 'ओ, और 'औ' सुन्दर चमकते हुए दाँत हैं, 'अं' तालु है, 'अः' जीभ है और जो श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ हैं, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं वन्दना करता हूँ ॥५२॥

कं खं गं घं ङं दक्षबाहु कमलां चंछंजंझंञान्विताम् ।
वामां वामकरां वशिष्ठ विनुतां टंठंडंढं णान्विताम् ॥
दत्तांघ्रि तथदध द्धनां चितपदां वामाख्य विद्याश्रिताम् ।
पंफाकार कटिप्रदेश रचितां देवीं त्रिवेणींभजे ॥५३॥

भावार्थ—कं खं गं घं और ङं बीज मन्त्रों से जिनकी दाहिनी भुजा सुरक्षित हैं, चं छं जं झं और ञं से जिनकी बायीं भुजा लक्ष्मी के समान है, वशिष्ठ ने जिनकी स्तुति की है, टं ठं डं ढं और णं से युक्त जिनका दाहिना पैर है, त थ द ध से जिनके चरणों की पूजा की जाती है, जो तन्त्र-विद्या (वाम मार्ग) के

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आश्रित हैं, पं तथा फ के आकार से जिनके कटि भाग की रचना की गई है, ऐसे त्रिवेणीदेवी की मैं बन्दना करता हूँ ।।५३।।

[इदं त्रिवेण्या प्रयतः पुनानयः
स्तोत्रं पठेत् साधु समाहितात्मा ।
तस्यार्थ कामाः सकला भवेयुः
सिद्धा ध्रुवं नात्र वितर्कणास्यात् ।।५४।।]

भावार्थ—जो मनुष्य पवित्र एवं सावधान होकर इस त्रिवेणी स्तोत्र का पाठ करेंगे, उनकी सकल कामनायें निश्चित रूप से सिद्ध होंगी इसमें सन्देह नहीं है ।।५४।।

।। इति श्रीत्रिवेणी स्तोत्रं समाप्तम् ।।

स्वामी श्रीजयदेव मिश्र 'जपाचार्य'

नोट—श्लोक ५२ और ५३ में सभी वर्णमाला बीजमन्त्र से भगवती त्रिवेणीदेवी की आराधना की गई है, समस्त वर्णमालाओं में ही बीजमन्त्र एवं संसार की विद्या एवं अविद्या निहित है । अतः यदि सम्पूर्ण पाठ भक्त-जन न कर सकें तो केवल इन्हीं दो श्लोकों का पाठ कर लेने से ही पूर्ण फल का लाभ कर सकते हैं ।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

महाभारतके प्राण महात्मा कर्ण

(पञ्चम संस्करण)

अब तक आप दानवीर कर्णको कौरवोंके पक्षका एक साधारण सेनापति ही समझते होंगे। इस पुस्तकको पढ़कर आप समझ सकेंगे, वे महाभारतके प्राण थे, भारतके सर्वश्रेष्ठ शूरवीर थे, उनकी महत्ता, शूरवीरता, ओजस्विता, निर्भीकता, निष्कपटता और श्रीकृष्णके प्रति महती श्रद्धाका वर्णन इसमें बड़ी ही ओजस्वी भाषा में किया है। ३५६ पृष्ठकी सचित्र पुस्तकका मूल्य केवल २॥।) दो रुपये बारह आने मात्र है, शीघ्र मँगाइये, नूतन संस्करण छप गया है।

मतवाली मीरा

चतुर्थ संस्करण

भक्तिमती मीराबाईका नाम किसने न सुना होगा। उनके पद-पद्में हृदयकी वेदना है अन्तःकरणकी कसक है। ब्रह्मचारीजीने मीराके भावोंको बड़ी ही रोचक भाषामें स्पष्ट किया है। मीराके पदोंकी उसके दिव्य भावोंकी नवीन ढँग से आलोचना की है, भक्ति शास्त्रकी विशद व्याख्या है, प्रेमके निगूढ़ तत्वको मानवी भाषामें वर्णन किया है। मीराबाईके इस हृदय दर्पणको आप देखें और बहिन, बेटियों माता तथा पत्नी सभीको दिखावें। आप मतवाली मीराको पढ़ते पढ़ते प्रेममें गद्गद् हो उठेंगे। मीराके ऊपर इतनी गंभीर आलोचनात्मक शास्त्रीय ढँगकी पुस्तक अभी तक नहीं देखी गयी। २२४ पृष्ठकी सचित्र पुस्तकका मूल्य २) दो रुपये मात्र है। मीराबाई का जहरका प्याला लिये चित्र बड़ा कला पूर्ण है।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नाम–संकीर्तन–महिमा

लगभग १६-१७ वर्षके पहिले जब गोरखपुरमें अखंड कीर्तन हुआ था, तब ब्रह्मचारीजीने एक सज्जनके कहनेपर नाम संकीर्तन के ऊपर जितनी भी शङ्काएँ उठ सकती हैं, उनका शास्त्रीय ढङ्ग से युक्तियुक्त समाधान किया। यह पुस्तक प्रथम देहली से प्रकाशित हुई थी और थोड़े ही दिनोंमें अप्राप्य भी हो गयी। अब इसे हमने फिरसे छापा है। अन्तमें संकीर्तन की सुमधुररसों से युक्त अधिक ध्वनियाँ, स्तुति, प्रार्थना, और गाने योग्य सुन्दर-सुन्दर पद भी दे दिये हैं। पृष्ठ संख्या सौ है। मूल्य ॥)

"श्रीशुक"

ले०:—श्रीब्रह्मचारीजी

रङ्गमञ्चपर खेलने योग्य धार्मिक नाटक जन हितार्थ बहुत ही उपादेय है। अश्लोलांश तथा स्त्री पात्रोंका अभाव होते हुए भी यह नाटक अत्यंत रोचक लिखा गया है। सभी कोटिके पुरुषोंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। पृष्ठ संख्या १२५, मू० ॥)

॥ श्रीराम ॥

सचित्र

"राघवेन्दु—चरित"

लेखकः—श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी

श्रीब्रह्मचारीजी ने "भागवती कथा" के (२७ से ३१ तक) ५ खण्डोंमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजीके परम पावन चरित्र का वर्णन किया है। इन खण्डोंके प्रत्येक अध्याय के आदिमें और अन्तमें एक एक छप्पय है जो परस्परमें संबंधित हैं, बीच बीचमें

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कथा प्रसंग जोड़ने को दोहा, सोरठा, छन्द तथा पद आदि भी सम्मिलित कर दिये गये हैं, इस प्रकार यह श्रीरामचन्द्रजी का चरित्र "तुलसीकृत रामायण" के तुल्य पाठ करने के लिये अलौकिक वस्तु हो गया है। २ घण्टे में इसका पाठ करने से सम्पूर्ण रामायण का पूर्ण फल प्राप्त होगा। पृष्ठ लगभग १६०, मु० ।=)

शोक-शान्ति

(श्रीब्रह्मचारीजी का एक मनोरञ्जक और तत्वज्ञान-पूर्ण पत्र)

[पञ्चम संस्करण छपकर तैयार है]

इस पुस्तक के पीछे एक करुण इतिहास है। आन्ध्र के गुन्टूर प्रान्त का परम भावुक युवक श्रीब्रह्मचारीजी का परम भक्त था, अपने पिता का इकलौता अत्यन्त ही प्यारा दुलारा पुत्र था। वह त्रिवेणी सङ्गम पर अकस्मात् स्नान करते समय डूबकर मर गया। उसके संस्मरणों को श्रीब्रह्मचारीजी ने बड़ी ही करुण भाषा में लिखा है पढ़ते पढ़ते आँखें स्वतः बहने लगती हैं। फिर एक साल के पश्चात् उसके पिता को बड़ा ही तत्वज्ञान पूर्ण ५०। ६० पृष्ठों का पत्र लिखा या। उस लिखे पत्र की हिन्दी तैलगू और अँगरेजी में बहुत-सी प्रतिलिपियाँ हुई, उसे पढ़कर बहुत से संतप्त प्राणियों ने शान्ति लाभ की। इसमें मृत्यु क्या है, इसको बड़े ही सुन्दर ढँग से मनोरञ्जक कथाएँ कहकर वर्णन किया गया है, लेखक ने अपने निजी जीवन के दृष्टान्त देकर पुस्तक को अत्यन्त उपादेय बना दिया है। अक्षर अक्षरमें विचारक लेखककी अनुभूति भरी हुई है। उसे हृदय खोलकर रख दिया है। प्रत्येक घरमें इस पुस्तक का रहना आवश्यक है। ६४ पृष्ठ की सुन्दर पुस्तक का मूल्य ।=)…।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भारतीय संस्कृति और शुद्धि

क्या अहिन्दु हिन्दु बन सकते हैं ?

आज सर्वत्र बलात् धर्म परिवर्तन हो रहे हैं। हिन्दु समाजसे लाखों स्त्री, पुरुष सदाके लिये निकल कर विधर्मी बन रहे हैं, कुछ लोगोंका हठ है कि जो अहिन्दु बन गये, वे सदा के लिये हिन्दु समाजसे गये, फिर वे हिन्दु हो ही नहीं सकते। श्रीब्रह्मचारीजीने पुराण, स्मृति, इतिहास और प्राचीन ग्रन्थों से प्रमाणों से यह सिद्ध किया है, कि हिन्दु समाज सदासे अहिन्दुओंको अपने में मिलाता रहा है। जबसे हिन्दु समाजने अन्य सम्प्रदायवालोंके लिये अपना द्वार बंद किया है तभीसे उसका ह्रास होने लगा है। बड़ी ही सरल सुंदर भाषामें शास्त्रीय विवेचन पढ़कर अहिन्दुओं को हिन्दु बनाइये। अपने समाज की उन्नति कीजिये। सुन्दर छपाई सफाई युक्त ७५ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य केवल ।=)।

"श्री श्री चैतन्य चरितावली"

(ले०:—श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी)

श्रीब्रह्मचारीजीने श्रीमहाप्रभु के पावन चरित को बड़ी ही हृदयग्राही एवं रोचक भाषा में ५ खण्डोंमें वर्णन किया है। जिसे आजसे २४, २५ वर्ष पहिले गीताप्रेस गोरखपुर ने प्रकाशित किया था। सभी कोटि के पुरुषोंने इसे हृदयसे अपनाया और इनके दो संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गये। इसका तीसरा संस्करण संकीर्तन भवन झूसी से निकला है। प्रथम खण्ड छपकर तैयार है, शेष खण्ड शीघ्र ही छप रहे हैं। मू० १) प्रथम खण्ड।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मेरे महामना मालवीय जी

और

उनका अन्तिम सन्देश

अधिकारियोंने श्रीब्रह्मचारीजी को विजयादशमी के अवसर पर रामलीलाके जुलूसके सम्बन्धमें कारावास भेज दिया था। देश के कोने कोने से युक्तप्रान्त के मुख्य मन्त्री के पास सैकड़ों तार पत्र गये। रोग शय्यापर पड़े पड़े महामना मालवीयजी ने प्रधान मंत्री और गृहमंत्री को तार दिये। वे ही उनके जीवनके अन्तिम तार थे। ब्रह्मचारीजी को छुड़ानेको उन्होंने तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीपन्तजी और तत्कालीन पुलिस मन्त्री स्वर्गीय मिस्टर किद्वई को जो पत्र लिखे वे ही उनके अन्तिम पत्र थे। इन पत्रों को लिखकर और ब्रह्मचारीजीको छुड़ाकर उसके आठवें दिन वे इस असार संसार से चल बसे। इस पुस्तक में उन पत्रों के लिखनेका बड़ा ही सरस, रोचक और हृदयग्राही इतिहास है। महामना मालवीयजीके संबंध के श्रीब्रह्मचारीजी महाराज के अनेकों सुखद संस्मरण हैं। अन्त में उनका पूरा ऐतिहासिक सन्देश भी है। पुस्तक बड़ी रोचक और ओजस्वी भाषामें लिखी गयी है गुटकाके आकार के लगभग १३० पृष्ठ हैं। मूल्य ।)। १) से कम का वी० पी० न भेजी जायगी। स्वयं पढ़िये और मँगाकर वितरण कीजिये, तृतीय संस्करण बहुत बड़ी संख्या छपकर बिक्री हो रहा है।

भागवती कथाकी बानगी

जो सज्जन 'भागवती कथा' के पूरे खंडोंका अध्ययन नहीं कर सकते या उसका कुछ आस्वादन शीघ्र ही करना चाहते हैं वे इस चासनी रूप बानगीको आज ही ।) भेजकर मँगालें। पृष्ठ सं० १००

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीहरिः ॥

श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

जो हमारे यहाँ मिलती हैं।

१—भागवती कथा—(१०८ खंडोंमें), ६८ खंड छप चुके हैं। प्रति खण्ड का मूल्य १।), बारह आना डाकव्यय पृथक्।

२—श्री भागवत चरित—लगभग ६०० पृष्ठकी, सजिल्द मू० ५।)

३—बदरीनाथ दर्शन—बदरीनाथ यात्रापर खोजपूर्ण महाग्रन्थ मू० ४)

४—महात्मा कर्ण—शिक्षाप्रद रोचक जीवन, पृ० ३५६, मू० २।।।)

५—मतवाली मीरा—भक्ति का सजीव साकार स्वरूप, मू० २)

६—नाम संकीर्तन महिमा—भगवन्नाम संकीर्तन के सम्बन्ध में उठने वाली तर्कों का युक्तियुक्तपूर्ण विवेचन। मू० ॥)

७—श्रीशुक—श्रीशुकदेवजी के जीवन की झाँकी (नाटक) मू० ॥)

८—भागवती कथा की बानगी—(आरंभ के तथा अन्य खंडोंके कुछ पृष्टों की बानगी) पृष्ठ संख्या १००, मू० ।)

९—शोक शान्ति—शोक की शान्ति करने वाला रोचक पत्र मू० ।≈)

१०—मेरे महामना मालवीयजी—उनके सुखद संस्मरण पृष्ठ १३० मू० ।)

११—भारतीय संस्कृति और शुद्धि—क्या अहिन्दु हिन्दु बन सकते हैं ? इसका शास्त्रीय विवेचन पृष्ठ सं० ७६ मू० ।≈)

१२—प्रयाग माहात्म्य—मू० ≈)

१३—वृन्दावन माहात्म्य—मू० ≈)

१४—राघवेन्दु चरित—भागवतचरितसे ही पृथक् छापागया है मू० ।≈)

१५—प्रभुपूजा पद्धति—पूजा करने की सरल शास्त्रीय विधि मू० =)

१६—श्री चैतन्य चरितावली—पाँच खंडोंमें प्रथम खंड का मू० १)

१७—भागवत चरित की बानगी—भागवत चरित के कुछ अध्यायों की बानगी मू० ।)

१८—गोविन्द दामोदर शरणागत स्तोत्र(छप्पयछंदों में) मू० =)॥

१९—गोपीगीत—(मूल तथा हिन्दी पद्य सहित) अमूल्य।

२०—श्रीकृष्ण चरित—भागवत चरितसे ही पृथक् छापा गया है मू० २)

पता-संकीर्तन भवन प्रतिष्ठानपुर (झूसी) प्रयाग।

भागवत प्रेस

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri